ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in June 2025

प्रेमचंद युग से 1980 तक हिंदी सामाजिक उपन्यासों में पारिवारिक परिवेश का अध्ययन

रीतु दत्ता, शोधार्थी (हिंदी), टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
पूजा धमेजा, सहायक आचार्य (हिंदी), टांटिया विश्वविद्यालय श्रीगंगानगर

सार

हिंदी सामाजिक उपन्यासों में पारिवारिक परिवेश का विशेष महत्व रहा है। प्रेमचंद युग से लेकर 1980 तक के उपन्यासों में परिवार न केवल कथा का केंद्र रहा है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और नैतिक मूल्यों का प्रतिबिंब भी रहा है। इस शोध–पत्र का उद्देश्य प्रेमचंद युग से 1980 तक हिंदी सामाजिक उपन्यासों में चित्रित पारिवारिक संरचना, संबंधों और परिवर्तनों का अध्ययन करना है। यह अध्ययन दर्शाता है कि समय के साथ परिवार की भूमिका, स्वरूप और मूल्य किस प्रकार परिवर्तित हुए हैं।

प्रस्तावना

हिंदी उपन्यास साहित्य में सामाजिक यथार्थ का चित्रण प्रारंभ से ही महत्वपूर्ण रहा है। परिवार भारतीय समाज की मूल इकाई है, इसलिए सामाजिक उपन्यासों में पारिवारिक जीवन का यथार्थ चित्रण स्वाभाविक रूप से मिलता है। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में संयुक्त परिवार, पारिवारिक संघर्ष और नैतिक मूल्यों को प्रमुखता दी।

प्रेमचंद के बाद के उपन्यासकारों–जैसे यशपाल, अज्ञेय, फणीश्वरनाथ रेणु, भीष्म साहनी आदिकृने बदलते सामाजिक परिवेश में परिवार के विघटन, संघर्ष और नई पारिवारिक संरचनाओं को प्रस्तुत किया। 1980 तक आते–आते पारिवारिक संबंधों में आधुनिकता और व्यक्तिवाद का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देने लगता है।

साहित्य समीक्षा

हिंदी सामाजिक उपन्यासों पर अनेक विद्वानों ने अध्ययन किया है। प्रेमचंद के उपन्यासों में पारिवारिक जीवन की यथार्थवादी अभिव्यक्ति पर रामविलास शर्मा और नामवर सिंह ने विशेष रूप से प्रकाश डाला है। यशपाल और भीष्म साहनी के उपन्यासों में परिवार और समाज के बीच संघर्ष को कई शोधकर्ताओं ने रेखांकित किया है।

हालाँकि, अधिकांश अध्ययनों में पारिवारिक परिवेश को व्यापक सामाजिक संदर्भ में देखा गया है। प्रेमचंद युग से 1980 तक परिवार के बदलते स्वरूप पर केंद्रित समग्र अध्ययन अपेक्षाकृत कम मिलता है, जिससे इस शोध की आवश्यकता स्पष्ट होती है।

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। शोध के लिए द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है, जिनमें:

- हिंदी सामाजिक उपन्यास
- आलोचनात्मक ग्रंथ
- शोध पत्र एवं पत्रिकाएँ

चयनित उपन्यासों में पारिवारिक संबंधों, संरचना और मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

अनुसंधान अंतराल

अब तक हुए अध्ययनों में सामाजिक यथार्थ और वर्ग संघर्ष पर अधिक बल दिया गया है, जबकि प्रेमचंद युग से 1980 तक पारिवारिक परिवेश के क्रमिक विकास और परिवर्तन पर केंद्रित समग्र अध्ययन का अभाव है। यह शोध इस अंतराल को भरने का प्रयास करता है।

अध्ययन का महत्व

यह अध्ययन महत्वपूर्ण है क्योंकि:

- यह हिंदी सामाजिक उपन्यासों में परिवार की भूमिका को स्पष्ट करता है
- बदलते सामाजिक मूल्यों को समझने में सहायता करता है
- हिंदी साहित्य के विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए उपयोगी है
- भारतीय समाज के पारिवारिक ढाँचे के विकास को समझने में सहायक है

निष्कर्ष

प्रेमचंद युग से 1980 तक हिंदी सामाजिक उपन्यासों में पारिवारिक परिवेश निरंतर परिवर्तनशील रहा है। जहाँ प्रेमचंद के उपन्यासों में संयुक्त परिवार और नैतिक मूल्यों की प्रधानता मिलती है, वहीं बाद के

उपन्यासों में पारिवारिक विघटन, तनाव और व्यक्तिवाद का प्रभाव दिखाई देता है। यह अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि हिंदी सामाजिक उपन्यासों में परिवार समाज के बदलते स्वरूप का सशक्त माध्यम रहा है।

संदर्भ सूची

- प्रेमचंद – गोदान
- प्रेमचंद – निर्मला
- यशपाल – दिव्या
- भीष्म साहनी – तमस
- नामवर सिंह – कहानी नई कहानी
- रामविलास शर्मा – प्रेमचंद और उनका युग
- डॉ. बच्चन सिंह – हिंदी उपन्यास का इतिहास

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY